संपादक के नोट

मैं मेरे प्रभु और मुक्तिदाता यीशु मसीह के नाम से आप सभी का अभिवादन करती हूँ, जिसे सब महिमा और आदर अंतर्गत रखता है।

भजन संहिता ९१:१४ कहता है – **"उसने मुझ से प्रेम किया है, इसलिए मैं उसे छुड़ाऊँगा; मैं उसे ऊँचे स्थान पर सुरक्षित रखूंगा, क्योंकि उसने मेरा नाम जान लिया है।** क्या तुम हमारे प्रभु के नाम को जानते हो? परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा, दिलासा देनेवाला के कई नाम हैं। सबसे पहले उसके नाम को जानो और फिर उसकी आराधना करो और उससे प्रार्थना करो, जो तुम्हारे जीवनों में महान आशीष का अनुभव लाएगा। इसलिए, हमारे प्रभु के नाम को जानो। परमेश्वर का एक सेवक जिसने पवित्र–शास्त्र में परमेश्वर के दिए गए नाम की खोज की, लगभग **२७२** नामों को पाया है। हालांकि जितने भी नाम हमारे परमेश्वर के हैं, हर नाम परमेश्वर के महानता को दर्शाता है। प्रेरित पौलुस प्रभु को जानने के लिए कुछ भी बलिदान करने के लिए तैयार था। **फिलिप्पियों ३:८ – इस से भी बढ़कर मैं अपने प्रभु येशु मसीह के ज्ञान की श्रेष्ठा के कारण सब बातों को तुच्छ समझता हूं। जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई है और उन्हें कूड़ा समझता हूं जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं।**

हमारे परमेश्वर के सभी नामों के बीच मुख्य नाम एलोहीम है।
एलोहीम के दो महत्वपूर्ण अर्थ है –
एक निर्माता है
दूसरा सर्वशक्तिमान है
दोनों एक साथ, इसका मतलब, वह एक सर्वशक्तिमान निर्माता है। उसके सर्वशक्तिमान बल से उसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया। प्यारों, कितनी सुंदरता से उसने तुम्हारी मां के गर्भ में तुम्हे बनाया है।
केवल वही तुम्हारा पिता और माता है।
वह तुम्हारी अगुवाई महान करुणा के साथ करेगा।
परमेश्वर के निर्माण का कोई अंत नहीं हो सकता है।
दाऊद ने उसके जीवन में एक महत्वपूर्ण कार्य रचने के लिए परमेश्वर एलोहीम को पुकारा। वह महत्वपूर्ण कार्य क्या है ? **भजन संहिता ५१:१० – हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा फिर से जागृत कर।** दाऊद ने सूरज, चांद और सितारों के निर्माता से पूछा कि उसके जीवन में एक छोटी चीज़ करे। लेकिन यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण

चीज़ है। मनुष्य के गुण पाप–भरा होने का कारण यह है कि चाहे कितना भी पवित्र एक मनुष्य रहे, उसका भौतिक शरीर एक पापी जीवन जीना चाहता है, इसके कारण मनुष्य परमेश्वर की उपस्थिति से दूर है। इस कारण वह अपनी खुशी और शांति खो देता है। तो हमे हमारे में एक शुद्ध हृदय बनाने के लिए प्रभु से माँगना चाहिए।

प्रिय लोगों, हमे शुद्ध हृदय देने के लिए उसके हृदय के पास छेद किया गया था जहाँ से पानी और रक्त प्रवाहित हुई।

युहन्ना १९:३४ – परन्तु सैनिकों में से एक ने भाले से उसका पंजर बेधा, और तुरन्त उसमें से लहू और पानी बह निकला। यह हमें शुद्ध होने में मदद करता है और हमें एक नया हृदय देता है।

तुम भी दाऊद की तरह प्रभु को पुकारना कि "हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर।"

यहूदी में एल शद्दाई का मतलब है सर्वशक्तिमान परमेश्वर। अब्राहम **९९** वर्ष का था, लेकिन परमेश्वर उससे प्यार करता था और एक माँ के रूप में उसे शानति दिलाता था।

यशायाह ६६:१३ – जैसे कोई अपनी मां से शांति पाता है वैसे ही तुम्हें भी मुझ से शांति मिलेगी, और तुम यरूशलेम में ही शांति पाओगे।"

"क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दुधमुंहे बच्चे को भूल जाए या कोई अपने ही गर्भ से जन्मे पुत्र पर दया न करे? चाहे ये भूल जाएं तो भूल जाएं, परन्तु मैं तुझे नहीं भूलूंगा।

भजन संहिता २७:१० – मेरे माता–पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।

परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और उससे बोला कहते हुए, **निर्गमन ६:२–३ – परमेश्वर ने मूसा से फिर बातें कीं और कहा, मैं यहोवा हूँ। मैंने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम से अब्राहाम, इसहाक, और याकूब को दर्शन दिया, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रकट न हुआ।**

तब मूसा परमेश्वर से कहा, वास्तव में जब मैं इसराएल के बच्चों के पास आता हूँ, और उन से कहता हूँ, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वे मुझसे कहते हैं, उसका नाम क्या है? मैं उनके लिए क्या कहूँ?ः "परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ।" और उसने कहा, इस्राएलियों से तू इस प्रकार कहनाः मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"

यहोवा के तीन अर्थ हैं ———

१) मैं जो हूँ सो हूँ

२) मैं न बदलनेवाला परमेश्वर हूँ
३) मैं शाश्वत परमेश्वर हूँ

आज हमे हमारे परमेश्वर यहोवा के अर्थ को समझना चाहिए।
स्तोत्रकार दाऊद **भजन संहिता ८:४ में कहता है – परमेश्वर के लिए गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ; जो विस्तृत मरूभूमि से सवार होकर निकलता है, उसके लिए राजमार्ग बनाओ; उसका नाम याह है, उसके सम्मुख हर्षित हो!**

नबी यशायाह १२:२ में कहता है – देखो, परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूंगा और भयभीत न होऊंगा; क्योंकि यहोवा परमेश्वर मेरा बल और मेरे गीतों का विषय है, और वह मेरा उद्धार बन गया है।

प्रिय लोगों, परमेश्वर कभी नहीं बदलता, उसका प्यार नहीं बदलता है, उसका अनुग्रह का उपहार कभी नहीं बदलता है, उसकी बुलाहट कभी बदलता नहीं।
प्रभु **मलाकी ३:६** में कहता हैं – **"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसलिए हे याकूब के सन्तान तुम नाश नहीं हुए।**
येशु कल, आज, और हमेशा के लिए वही है।
येशु ने कहा, "और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही करूँगा कि पुत्र में पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझ से मेरे नाम में कुछ भी मांगोगे तो मैं उसे करूँगा।"

इसलिए हम अपने उद्धार में आननदित होंगे और हम हमारे परमेश्वर के नाम चिह्नित करें।
प्रभु हमारे सभी याचिकाओं को पूरा करें।

हम फिर मिलेंगे, तब तक प्रभु हमारे सभी पाठकों को अशीष दें।

पास्टर सरोजा म.

परमेश्वर का वादा सदैव अनमोल हैं।

२ पतरस १:४ – क्योंकि उसने इन्ही के कारण हमें अपनी बहुमूल्य और उत्तमप्रतिज्ञाएं दी हैं, जिससे कि तुम उनके द्वारा उस भ्रष्ट आचरण से जो वासना के कारण संसार में है, छूट कर ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ। हमारे परमेश्वर ने हमे अत्यंत महान और अनमोल वादें दिए हैं। उदा – जब हम सेंडविच मँगाते हैं, हम में से कुछ लोगों को ज़्यादा मक्खन चाहिए तो हम उसके लिए ज़्यादा पैसे भी देते है। इसी प्रकार, हमारे परमेश्वर ने हमे कोई साधारण वादा नहीं दिया लेकिन विशेष वादा दिया है, इस तरह उसका भरपूर अनुग्रह हम पर है। सरकार ने पैसे के नोटों को छपाया है, ५०, १००, ५००, १००० आदि.....उसे वास्तविक बनाने के लिए हर पैसे के नोट पर रिजर्व बैंक राज्यपाल का हस्ताक्षर है। कुछ समय बाद, सरकार निर्णय लेता है कि १०० रुपये के नोट के संचलन पर प्रतिबंध लगाया जाए, कई 100 रुपये के नकली करेंसी नोट भी प्रचलन में आ गए हैं, उस समय, हम में से बहुत जिन्होने रू. १०० के नोट जमा किए हैं दुखित होते हैं सरकार के इस निर्णय के कारण। लेकिन याद रखें, हमारा परमेश्वर जिसने हमे असाधारण और अनमोल वादें दिए हैं हमे कभी मायुस नहीं करता और हमे जीवन में कभी दुखी नहीं करता है। "वचन" कहता है स्वर्ग और पृथ्वी मिट जाएगा लेकिन परमेश्वर का वचन कभी नहीं मिटेगा। इसलिए परमेश्वर कहता हैं, उसका वादा अनमोल है और इस संसार के किसी भी चीज़ के साथ उसकी तुलना नहीं की जा सकती। हर वादा जो सरकार का है असफ़ल हो सकता है, आरबीआई के राज्यपाल ने किए हस्ताक्षर के नोटों को भी सरकार निर्णय ले सकता है रोकने के लिए। लेकिन हमारे परमेश्वर का अनमोल वादा हमेशा, हमेशा, हमेशा के लिए है। हमारा परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता हैं, वह एक सच्चा परमेश्वर है। हम देखते हैं **गिनती २३:१९ – परमेश्वर मनुष्य नहीं कि वह झूठ बोले न वह मानव–पुत्र है कि पछताए। क्या वह कुछ कहे, और उसे न करे? या क्या वह कुछ बोले, और उसे पूरा न करे?** इस संसार में, हम देखते हैं कि सरकार चाहे कितने भी वादे करता हैं, वें कभी–कभी असफ़ल होते हैं और बात बदलते हैं। लेकिन परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता, उसका वचन सच्चा है इस संसार के अंत तक भी। वह एक न बदलनेवाला परमेश्वर है।

प्रेरित पौलुस ने बहुत–सी किताबें, पवित्र शास्त्र के लिखे हैं, वें सारे, खास कर, इफिसियों का किताब एक अत्यंत महान और अनमोल किताब है। **इफिसियों २:६–७ – और मसीह येशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया, जिससे कि आने वाले युगों में वह अपनी उस कृपा से जो मसीह येशु में हम पर है अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।** हमारे परमेश्वर के महान वादें हमारे जीवनों में येशु मसीह, उसके बेटे के द्वारा पूरा होगा। यह केवल उसके अनुग्रह के द्वारा जो हमारे लिए है, कि परमेश्वर ने उसके एक मात्र पुत्र को भेजा, उसके बलिदान द्वारा, अत्यंत एश्वर्य उसकी दया कि प्राप्त हो। हमारे परमेश्वर ने उसके वादे को हमारे लिए नहीं बदला इस संसार के रचना के समय से ही। उसने आदम और हव्वा की रचना की और उस समय से हमे एकता और एक मन में एक साथ रहने को सिखाया। इस प्रकार परमेश्वर अपना वादा हमारे लिए नहीं भूला है। हमारे जैसे पापियों के लिए, जो इस संसार में भटके हुए हैं, हमारे पापों और गलत करतूतों के कारण अपना मार्ग खोए हुए हैं, परमेश्वर ने उसका बेटा येशु मसीह को हमे बचाने के लिए भेजा। केवल उसके नाम से, उसके अनुग्रह से और उसके करूणा से ही हमे आश्वासन मिलता है कि हम परमेश्वर पिता से उसके स्वर्गीय राज्य में मिलाए जाएंगे। हाँ, परमेश्वर ने उसके वादे का स्मरण किया जो उसने अदन की वाटिका में किया और इस प्रकार अंत तक वह अपना यह वादा मानव–जाति पर पूरा करेगा। वचन ७ कहता है – जिससे कि आने वाले युगों में वह अपनी उस कृपा से जो मसीह येशु में हम पर है अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। केवल येशु के द्वारा हम स्वर्गीय राज्य के बहुतायत धन को देख पाएंगे।

हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं, मूसा ने परमेश्वर के अनमोल प्यार का अनुभव किया। **व्यवस्थाविवरण ३:२४ – "हे प्रभु यहोवा, तू ने अपने दास पर अपनी महानता तथा अपना भुजबल प्रकट करना आरम्भ कर दिया है, क्योंकि स्वर्ग में या पृथ्वी पर ऐसा कौन–सा देवता है जो ऐसे ऐसे काम तथा सामर्थी कार्य कर सके जो तू करता है?** मूसा जिसने परमेश्वर के अनुग्रह और उसके महान कार्यों के हाथ को अपने ऊपर अनुभव किया, कहता है – "प्रभु परमेश्वर तेरे जैसा, कौन इन महान और शक्तिशालि कार्यों को हमारे जीवनों में कर सकता है, कोई भी ईश्वर न स्वर्ग में और न पृथ्वी पर कर सकता है जो तू ने हमारे लिए किया, तेरे जैसा कोई नहीं है।" शुरूवात से, परमेश्वर का प्यार हमारे जीवनों में बहुतायत से रहा है; उसने उसका अनमोल पुत्र येशु मसीह को हम पापियों के लिए दिया। उसका प्यार न बदलनेवाला और

सच्चा है। इस संसार में बनाए गए कायदे समय–समय देखा जाता है और जैसे ज़रूरत हो वैसे बदली जाती है, नए कायदें प्रबल होतें हैं। लेकिन इसके विपरित प्यार और परमेश्वर के वादे हमेशा के लिए रहता है। हमारा परमेश्वर कभी नहीं झूठ बोलता है, वह अंत तक सच्चा है। इस संसार में हम देखते हैं कि प्रकृति में सामर्थ है, शक्ति और बल है। यह गरजने, बिजली, तूफान, आंधी आदि द्वारा प्रकट होता है। मनुष्यों में भी ऐसा सामर्थ है, जो सेनाओं में हैं जैसे कि सेना, नौसेना, और वायुसेना में अलग–अलग शक्ति है। हर सेना में अलग सामर्थ है। इसी प्रकार दुष्ट में भी सामर्थ है जैसे कि, मनुष्य का विश्वास जो परमेश्वर पर है उसे कमज़ोर करना, इस संसार में उसे भटकाकर नाष करना, जादू–टोने में उसे शामिल करना और अन्य दुष्ट कायी में, आदि। याद रखें, हमारा परमेश्वर इन सारी ताकतों से अधिक सामर्थी है। वह एक सामर्थी परमेश्वर है। **उत्पत्ति १७:१ – जब अब्राहाम निन्यानवे वर्ष का हुआ, तब यहोवा ने अब्राहाम पर प्रकट होकर उस से कहा, ष्मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; तू मेरे सम्मुख चल और सिद्ध होता जा।** हमारा परमेश्वर सर्व शक्तिमान और सर्व सामर्थी है, केवल उसी के पास सामर्थ है इन सारी शक्तियों को जो संसार में हैं नियंत्रित करने के लिए। चाहे इस दुनिया का दुष्ट हम पर विनाश का डर लाए, लोग अलग–अलग तरीकों से हमें डराएंगे लेकिन हमे अपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को याद करना हैं, हमारे लिए उसका अनमोल वादा संसार के अंत तक रहेगा। हमारे दिलों में, हमे विश्वास करना चाहिए कि हमारा परमेश्वर इस संसार में सर्व सामर्थी है, उसे लिए कुछ भी असंभव नहीं है, क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी की सारी ताकतें परमेश्वर पिता द्वारा येशु मसिह को दिया गया है। येशु मसिह **मत्ती ८:१८** में कहता है – **तब येशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।** हम देखते हैं कि हमारा परमेश्वर सच्चा है, उसका वादा न बदलनेवाला है और सारा सामर्थ हमारे प्रभु येशु मसीह के हाथों में दिया गया है। आज से **१०००** वर्ष पहले भी, परमेश्वर का वादा नहीं बदलेगा, तुम, मैं, आज सरकार बदल सकता है लेकिन परमेश्वर का वादा संसार के अंत तक रहेगा। वह महान रहस्यमय वादा क्या है जो परमेश्वर ने उसके बेटे येशु मसीह को दिया? यहीं ताकतें इस संसार के धर्मी बच्चों को बदले में देने के लिए। **मत्ती १०:१ – तब येशु ने अपने बारह चेलों को बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारी तथा सब प्रकार की दुर्बलता को चंगा करें।** येशु उसके धर्मी लोगों के इच्छाओं को पूरा करेगा। इस प्रकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर कि

ताकतें उसके पुत्र येशु मसीह को दिया है और येशु मसीह ने इन सामर्थों को उसके धर्मी लोगों को दिया हैं। हमे दी गई ताकतों के द्वारा, हमे दुष्ट के योजनाओं को हमारे जीवन में हराने के योग्य होना हैं। यह पहला विषय है जो हमे करना हैं, दुष्ट के योजनाओं को हराना। सृष्टी की रचना से ही हमने देखा हैं कि शैतान ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा को भर्माया। आज तक, दुष्ट वही कर रहा है, हमे ध्यान रखना हैं हमारे जीवन में दुष्ट के कार्य को पहचानने के लिए और उसके हर योजना और इच्छा जो हम पर हैं उन्हें हराने के लिए। केवल तब हम भोजन के निमंत्रण के लिए परमेश्वर के राज्य में तैयार हो सकते हैं। **प्रकाशितवाक्य १९:१ – इन बातों के पश्चात मैंने स्वर्ग में मानो एक बड़े जनसमूह को उच्च स्वर से यह कहते सुना "हाल्लेलूयाह! उद्धार, महिमा और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही के है।** यह लोग कौन हैं जिनका इस वचन में वर्णन हुआ हैं? ये वे हैं जिन्होने दुष्ट से लड़ाई की और विजय पाया और आज खड़े हैं हाल्लेलूयाह गाकर और परमेश्वर को महीमा देकर उसके राज्य में। ये वें हैं जिन्होने परमेश्वर के अनमोल वादे के ग्रहण किया और इस पृथ्वी पर उनकी जीत, जीत चुके हैं। ये भी दुष्ट के द्वारा परीक्षा किए गए थे, इन्होने भी क्लेश और संकटों का सामना उनके जीवनों में किया है लेकिन ये वें लोग हैं जिन्होंने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को उनके जीवन के हर क्लेश और संकट के सामने रखा है और अपनी जीत पाई है। इस प्रकार अंत में, ये लोग परमेश्वर के महिमामय राज्य में खड़े होकर हाल्लेलुयाह, उद्धार,महिमा और आदर और सामर्थ हमारे प्रभु परमेश्वर के लिए गाते रहते हैं। परमेश्वर का निर्णय सत्य और धार्मिक है। जब हम परमेश्वर के अनमोल वादे पर विश्वास करते है, तब हम दुष्ट के योजनाओं और कार्यों को हरा सकते है। परमेश्वर हमेशा धर्मी लोगों के साथ रहता हैं। कौन धर्मी हैं? जो परमेश्वर के अनमोल वादे पर विश्वास करते हैं, जो विश्वास करतें हैं कि हमारा परमेश्वर एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं और जो दुष्ट का सामना धैर्य से करते हैं और उससे विजय पाते हैं ऐसे लोग परमेश्वर के सामने धर्मी बनेंगे। परमेश्वर हमेशा धर्मी व्यक्ति के प्रार्थनाओं को सुनता हैं। **नीतिवचन १०:२४** में – **दुष्ट जिस बात से डरता है वही उस पर आ पड़ेगी, और धर्मी की मनोकामना पूरी की जाएगी।** याद रखें कि दुष्ट जो किसी चीज़ से ड़रते हैं वह उनके जीवनों में होता है। लेकिन धर्मियों कि इच्छाएँ हमेशा उन्हे दी जाती है। याद रखें, जब हम हमारे हृदय में धर्मी हैं, हम परमेश्वर से जो कुछ माँगेंगे, वह हमारे लिए दिया जाएगा।

हम पढ़ते हैं पवित्र शास्त्र में **भजन संहिता ३४:१० – जवान सिंहों को तो घटी होती है, और वे भूखे भी रह जाते हैं, परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी।** परमेश्वर के बच्चों के जीवन में कभी कोई कमी नहीं होगी। हमने दो जीवनो का उदाहरण देखा हैं, जक्कई और यहूदा इस्करियोती। जब येशु ने जक्कई के जीवन को छूआ, उसने उसके पापों को माना और पूरी तरह से मन को फिराया। उसने उन्हे जिनसे उसने अधर्मी रीति से लिया उन्हे चार गुना वापस लौटाया। लेकिन यहूदा इस्करियोती जो येशु के बारह चेलों में से एक था, जो येशु के नज़दीकी में चला, उसे तीस चाँदी के सिक्के के लिए उसे धोका दिया। बाद में वह पछताया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी उसने सिक्कों को फैंककर और सिक्के लौटाने के बाद आत्मा–हत्या की। हम आज इस्राएल में देखते है, जक्कई के गूलर का पेढ़ पैसे बना रहा है। लोगों की भीड़ लगती है उस पेढ़ को देखने के लिए जिसपर जक्कई खड़ा हुआ और येशु मसीह का एक झलक पाने के लिए ठहरा हुआ था। लेकिन, पूरे इस्राएल में यहूदा का चिन्ह नहीं है। याद रखें हमारा परमेश्वर एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर है; हमे अपने–आप को तैयार करना हैं उस भोजन में जाने का निमंत्रण पाने के लिए परमेश्वर के राज्य में। हमे परमेश्वर के अद्‌भुत और अनमोल वादा जो हमारे लिए है उसपर विश्वास करना है। जब हम उसके प्यार में बंधे हुए हैं, उसका वचन और उसके अनुग्रह में, हम ज़रूर परमेश्वर के सामने धर्मी बनेंगे। "धर्मी" मनुष्य की हर इच्छा परमेश्वर पूरा करता है। मूसा एक धर्मी मनुष्य था, इसलिए उसके हृदय की हर इच्छा को परमेश्वर ने पूरा किया। परमेश्वर हमारे हृदय में देखता है और हमारी हर इच्छा को पूरी करता है। **निर्गमन ३३:१८–२३ – तब मूसा ने कहा, मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे अपना तेज दिखा!" उसने कहा, मैं स्वयं अपनी सारी भलाई तेरे समक्ष प्रकट करूंगा, और तेरे समक्ष यहोवा के नाम का प्रचार करूंगा; और जिस पर अनुग्रह करना चाहूँ उस पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उस पर दया करूंगा। परन्तु उसने कहा तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता, क्योंकि कोई मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता! तब यहोवा ने कहा, देख, मेरे समीप एक स्थान है, और तू उस चट्टान पर खड़ा हो; और जब तक मैं तुझे चट्टान की दरार में रखूँगा और जब तक मैं तेरे सामने से होकर निकल न जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूँगा। फिर मैं अपना हाथ उठा लूँगा, तब तू मेरी पीठ को तो देख पाएगा, परन्तु मेरा मुख नहीं देख पाएगा।** मूसा ने परमेश्वर की महिमा को देखने की इच्छा

की, उन दिनों, जब कोई भी परमेश्वर की महिमा के सामने खड़ा नहीं रह सकता था फिर भी वह बच गया। लेकिन मूसा ने परमेश्वर को देखने की इच्छा की और परमेश्वर ने मूसा की इच्छा को पूरा किया। जैसा हमने पढा है **नीतिवचन १०:२४ – दुष्ट जिस बात से डरता है वही उस पर आ पड़ेगी, और धर्मी की मनोकामना पूरी की जाएगी।** परमेश्वर धर्मी के इच्छा को पूरा करता है, इसलिए परमेश्वर ने मूसा की भी इच्छा को पूरा किया। दाऊद की इच्छा कुछ ऐसे ही थी, हम पढ़ते हैं **भजन संहिता २७:४** में – **मैंने यहोवा से एक वर मांगा है, मैं उसी के यत्न में लगा रहूँगा; कि मैं अपने जीवन भर यहोवा के भवन में ही निवास करने पाऊँ, जिस से यहोवा की मनोहरता निहारता रहूँ और उसके मंदिर में उसका ध्यान करता रहूँ।** यह वहीं लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ अनुग्रह को पहचाना, उन्होने परमेश्वर के अनमोल वादे से युद्धों को जीता है, उन्होने उसके वादे पर विश्वास किया और उसके वचन पर स्थिर रहे धीरज के साथ और उनके जीत को पाया अंत में। इन महान मनुष्यों के महान अनुभवों का वर्णन पवित्र–शास्त्र में हमारे पढ़ने के लिए और पवित्र शास्त्र पर विश्वास करने के लिए दर्ज किया गया है। इस संसार में अलग ताकतें, कानून, नियम और विनियमन हैं लेकिन वें सब बदलते हैं और कभी भी बदल दिया जा सकता है। लेकिन हमारे हृदयों में हमे मानना हैं कि एक और बड़ा वादा है हमे हमारे परमेश्वर द्वारा दी गई है, अगर हम उसमें अंत तक बंधे रहे तो केवल वह हमे हमारे जीवन में विजय दिला सकता है। येशु खुद यक़ीन दिलाता है कि हर शक्ति जो स्वर्ग में है और इस संसार में है, "मुझे दी गई है।" यह सच्च है और इसके अलावा हमारे लिए और कोई वादा नहीं। इस प्रकार, हालांकि हम इस दुनिया में रहते हैं, फिर भी हम इस संसार के नहीं हैं, हमे निरंतर परमेश्वर की खोज में रहना हैं उन हर वस्तु में जो हम करते हैं। परमेश्वर कानून, नियम और विनियमन को हमारे लिए बदल सकता है। याद रखें, एक जानवर भी बच नहीं सकता था उन पर्वतों पर जब परमेश्वर ने उसके उपस्थिति को मूसा को दिखाया। **निर्गमन ३३:२०** कहता है – **परन्तु उसने कहा "तू मरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता, क्योंकि कोई मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता!"** लेकिन परमेश्वर ने मूसा से प्यार किया, उसके कानून को उसके लिए बदल दिया और मूसा से फिर बात किया और कहा वचन २३ – में फिर मैं अपना हाथ उठा लूँगा, तब तू मेरी पीठ को तो देख पाएगा, परन्तु मेरा मुख नहीं देख पाएगा।" हम जानते हैं कि हर बार जब इस्राएलियों ने

पाप किया, वे बंधन में चले गए और जब उन्होने परमेश्वर को पुकारा, वह हमेशा करूणामय और अनुग्रह भरा था और उन्हे हर बंधन और संकट से बचाता था। परमेश्वर ने उनके लिए मूसा में एक छुड़ानेवाला भेजा क्योंकि उसे इस्राएलियों पर बहुत प्यार था। बाद में परमेश्वर ने उसके एक मात्र पुत्र येशु मसीह को भेजा इस पृथ्वी पर हमारे लिए और उसके जीवन के बलिदान से हमारे पाप मुक्त हुए उसके अनमोल लहु से। आज भी, अगर हम गहरे संकट में हैं, दुख, दर्द, वेदना में, अगर हम केवल प्रभु को पुकारेंगे वह उसके वादा को स्मरण करेगा जो हमारे लिए है और हमे सारे संकटों से बचाएगा। लेकिन हमे परमेश्वर के लिए पुकारना है एक सच्चा हृदय के साथ यह विश्वास करके कि वह हमे बचाएगा। **भजन संहिता २७:४ – मैंने यहोवा से एक वर मांगा है, मैं उसी के यत्न में लगा रहूँगा; कि मैं अपने जीवन भर यहोवा के भवन में ही निवास करने पाऊँ जिस से यहोवा की मनोहरता निहारता रहूँ और उसके मंदिर में उसका ध्यान करता रहूँ।** दाऊद ने हमेशा इच्छा किया कि प्रभु को देखे, इसलिए उसने प्रभु के घर में वास करने का निर्णय लिया। हमारे जीवन में भी, जब हम परमेश्वर को खोजने कि इच्छा रखते हैं, वह हमेशा हमारी ओर रहता है और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। **भजन संहिता ६३:२ – इस प्रकार मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरे सामर्थ और तेरी महिमा को देखूं।** दाऊद घोषणा करता है यहाँ कि परमेश्वर के पवित्र मंदिर में उसने परमेश्वर के सामर्थ और महिमा को देखा है। परमेश्वर ने दाऊद की इच्छा को पूरा किया है। वह हमारी इच्छाओं को भी पूरा करने के लिए तैयार है। येशु कहता है **यूहन्ना ११:४०** में – **येशु ने उस से कहा, क्या मैंने तुझ से नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?** परमेश्वर जिसने उसके अनमोल वादे को दिया है आज हमसे कहता है "अगर तुम केवल विश्वास करोगे तो तुम मेरी महिमा को देखोगे।" यह परमेश्वर का वादा है हमारे लिए –– कल, आज और हमेशा हमेशा के लिए। जैसे मूसा ने परमेश्वर के महीमा को देखा है, दाऊद ने भी परमेश्वर के महीमा को देखा है, आज अगर हम भी यही इच्छा करते हैं, परमेश्वर का वादा न बदलनेवाला है और हमे केवल विश्वास करना है उसका अनुभव करने के लिए। उसका वादा असफ़ल न होनेवाला है, वह एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, व एक सच्चा परमेश्वर है। वचन में हमने पढ़ा है, धर्मियों की इच्छाएँ पूरी होती है, हमे केवल परमेश्वर के सामने "धर्मी" बनना है। **यशायाह ६०:२ – देख, पृथ्वी पर अनधियारा और जाति जाति के लोगों**

पर घोर अन्धकार छा जाएगा; परन्तु तुझ पर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रकट होगा। पूरा संसार घोर अंधकार में जा सकता है, लेकिन उन्होने, जिन्होने अच्छे प्रभु को चखा हैं और उसके अनमोल वादे पर विश्वास किया है, उसका पुत्र येशु मसीह इस जगत का उजाला हमारे मध्य चमकेगा और उसके ज़रिए हम परमेश्वर के महिमा को देख सकते हैं। हम स्तिफनुस के हादसे को जानते हैं, कैसे वह दुष्ट से चारों बाजूओं से घिरा हुआ था और वह अंधकार से घिरा हुआ था। लोग जो उसके ईर्द–गिर्द थे उन्होने उसपर पथराव करके उसे मार ड़ाला। लेकिन दुष्ट स्तिफनुस को परमेश्वर के दूत समान देखता है। यह सत्य है। आज भी हम ने हमारे येशु मसीह को नहीं जाना होगा, हमने उसपर विश्वास नहीं किया होगा, हमने उसके सामर्थी का हमारे जीवन में उपयोग नहीं किया होगा। लेकिन आज, हम चख सकते हैं और परमेश्वर के अनमोल वादे को हमारे जीवन में देख सकते है। परमेश्वर का वादा सारे पृथ्वी के शक्तियों से महान है। हमने ऐसे अंधकार का सामना हमारे ईर्द–गिर्द किया होगा, लेकिन अगर हम केवल विश्वास करेंगे और हमारे परमेश्वर को अपनाएंगे, व हमारे लिए सब–कुछ बदल सकता है हमारे जीवनों में सब–कुछ उत्तम बनने के लिए। प्रेरित पौलुस ने इच्छा किया कि इस्राएलियों को उनका "उद्धार" प्राप्त करना है। **रोमियों १०:१ – भाइयो, मेरी हार्दिक अभिलाषा और परमेश्वर से उनके लिए प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं।** जैसे ही मूसा के हृदय में इच्छा थी, जो परमेश्वर ने दिया, दाऊद ने भी अपने हृदय में कुछ इच्छा की और परमेश्वर ने वह भी दिलाया। अब हम प्रेरित पौलुस के इच्छा को देखते हैं कि इस्राएलियों को उद्धार मिले। हाँ, परमेश्वर ने हमे आशिष दिया है उसके पुत्र येशु मसीह द्वारा जिससे हम हमारे उद्धार को पा सकते हैं। प्रेरित पौलुस की इच्छा के द्वारा, परमेश्वर हमारी सारी इच्छाओं को भी पूरा करता है। पौलुस कहता है भाइयो, मेरी हार्दिक अभिलाषा और परमेश्वर से उनके लिए प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं। परमेश्वर ने उसे पूरा किया। **भजन संहिता ७३:२५ – स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे सिवाय मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।** चाहे दुष्ट हमे सारे बाजूओं से कितना भी दबाएँ और हमे अलग–अलग रीति से सताएँ, अगर हमारे खुदके प्यारे और परिवार के लोग भी छोड़ दे हमे याद रखना हमारे परमेश्वर के सर्वशक्तिमान हाथ हमे कभी नहीं छोड़ेगा। हमे विश्वास करना हैं कि सेनाओं का प्रभु हमारे साथ है, हमे आतमिक आँखों कि ज़रूरत हैं कि इस अनुग्रह को हम देखें। एलीशा दूतों की सेना को पहाड़ियों को घेरे हुए देख पाया, लेकिन उसका सेवक यह नहीं देख पाया। एलीशा ने परमेश्वर से

प्रार्थना किया कि उसके सेवक के आँखों को खोल दें। इसी प्रकार हमारी आतमिक आँखें ही परमेश्वर के इन अद्भुत कार्यों को हमारे जीवनों में देख पाएगा। आज, हमारे बच्चें हमे छोड़ सकते हैं, हमारे पुत्र–पुत्रियाँ, पत्नी, पति, परिवार सब एक–दूसरे को छोड़ सकते है हर कानून, नियम और विनियमन इस संसार के समय–समय पर बदलते रहेगा, लेकिन याद रखना हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अनमोल वादा हमारे लिए हमेशा–हमेशा के लिए रहेगा। हमारा परमेश्वर न सोता है न ऊँगता है, वह अच्छे–बुरे पर नज़र रखता है, और वह हमे बहुत–सी चीज़े दिखा सकता है जो हमारी खुली आँखें नहीं देख सकती। यह केवल तब है जब हमारी आतमिक आँखें खुली हैं हम सारे क्लेशों को जो इस संसार के हैं पार कर सकते हैं और केवल तब हम स्वर्गीय भोज में आने की दावत पाएंगे। हमारा परमेश्वर जीवित है, वह हमारा जीवित परमेश्वर है। **लूका १०:४२ – परन्तु कुछ बातें हैं – वास्तव में एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उस से छीना न जाएगा।** याद करे उस गीत को – "परमेश्वर का आनंद मेरी ताकत है।" जब परमेश्वर हमारे साथ है, हम किसी विषय से चिंतित नहीं होते, कुछ भी बोझ नहीं बनता और कुछ भी हमे चोंट नहीं पहुँचाती या दुखाती है। परमेश्वर का सामर्थी हाथ अनुग्रह का हम पर हमेशा है। यह कब हो सकता है? जब हम विश्वास करते हैं उसके अनुग्रह में और हम हमेशा हमारे हृदय में खुशी से सारा काम करते हैं। हमे केवल चखना हैं और देखना है कि हमारा परमेश्वर अच्छा है। अगर हम केवल सोचते हैं कि परमेश्वर कैसे उसके महान कार्यों को हमारे द्वारा करता हैं हम उसकी अच्छाई को हम पर देख सकते हैं। दाऊद कहता है **भजन संहिता ७३:२५** में – **स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे सिवाय मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।** हम जो कुछ प्रभु के लिए करते हैं, हमे महा आनंद के साथ करना हैं। हर कार्य प्रभु के लिए दिल से और खुशी से करना है। जब हम उसके पवित्र मंदिर में आते है, हमारे हृदय में हमे इच्छा करना है – परमेश्वर मुझसे आज क्या बात करेगा? कैसे प्रभु मेरे दुख और दर्द को चंगा करेगा? हमे विश्वास करना है कि हम निराश होकर नहीं लौटेंगे। हमे विश्वास करना है कि परमेश्वर उसके वचन द्वारा हमारे जीवन में अद्भुत कार्यों को करेगा। अगर हम उसी आशा और आनंद से आते हैं, परमेश्वर हमारे हृदयों को ज़रूर छूएगा और हमारी हर इच्छा को पूरा करेगा। हम मरियम की इच्छा को देखते हैं **लूका १०:४** में – **परन्तु कुछ बातें हैं – वास्तव में एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उस से छीना न**

जाएगा।" कोई भी इसे उससे नहीं छीन सकता है क्योंकि मरियम ने अच्छे भाग को चुना था। हमे भी उस भाग को चुनना है जो हमसे कोई नहीं छीन सकता है। हमे येशु मसीह हमारे परमेश्वर पर विश्वास करना है, जिसे स्वर्ग और पृथ्वी कि सारी ताकतें दी गई है। याद रखना, दुष्ट उसी रूप में नहीं आएगा जो उसने अदन की वाटिका में लेकर आया। दुष्ट अलग–अलग तरीकों से आएगा हम पर आक्रमण करने के लिए। इसलिए हमे हमारा ध्यान सर्वशक्तिमान परमेश्वर और उसके अनमोल वादे पर जो उसने हमे दिया है, केंद्रित करना हैं। यह संदेश हमारे जीवनों में आशिष बने।

पास्टर सरोजा म.